जैन विवाह विधि

– *कपूरचंद पाटनी*

विवाह का उद्देश्य

संसार में अनादिकाल से यह जीवात्मा नाना प्रकार के अच्छे से अच्छे और रमणीय विषय भोगों को भोगता हुआ चला आया है, परंतु आज तक कभी इन विषय भोगों से किसी को भी तृप्ति नहीं हुई और न हो सकती है। इसीलिए आचार्यों ने सच्चा सुख प्राप्त करने के लिए इन विषय भोगों के सर्वथा त्याग का उपदेश दिया है। वास्तव में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना बहुत ही उत्तम और कल्याणकारी धर्म है, इसके द्वारा आत्मा उत्तरोत्तर अपनी शक्ति को बढ़ाकर कर्म शत्रुओं को निर्बल करने के लिए समर्थ हो सकता है परंतु पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन अल्पशक्ति रखने वाले स्त्री-पुरुषों से नहीं हो सकता, इसीलिए आचार्यों ने ब्रह्मचर्याणुव्रत में परस्त्री त्याग और स्वदारसंतोष का उपदेश दिया है जिससे उसकी काम-तृष्णा धीरे-धीरे शांत हो जाए। विवाह धर्म की परंपरा को चलाने के लिए, मन और इंद्रियों के असंयम को रोक कर मर्यादा पूर्वक एन्द्रियिक सुख की इच्छा से किया जाता है। गृहस्थ को चाहिए कि वह नित्य जिनेंद्र देव की पूजा, गुरू की भक्ति, शास्त्र-स्वाध्याय, संयम-पालन, तप का अभ्यास और दान देना इन षट् आवश्यक कर्तव्यों का नियमानुसार पालन करता हुआ धर्म, अर्थ, काम तीन पुरुषार्थ का एक-दूसरे के साथ विरोध न करके सेवन करता रहे और यह भावना भावे कि कब ऐसा दिन आए जिस दिन मैं गृहवास से विरक्त होकर मुनि दीक्षा धारण कर तप द्वारा कर्मों को काटकर अनुक्रम से सच्चा सुख प्राप्त करूं। ऐसी भावना भाते रहने से एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब वह निर्वाण पद प्राप्त करके मनुष्य जन्म को सफल बना लेगा।

विवाह का लक्षण

''वाग्दानं च वरणं प्रदानं च, वरणं पाणि-पीड़नम्।

सप्तपदीति पंचांगों, विवाहे परिकीर्तितः।।''

अर्थात् जिसमें वाग्दान (सगाई), प्रदान (कन्यादान), वरण (कन्या का स्वीकरण), पाणि पीड़न (हथलेवा) और सप्तपदी (सात भांवरें), ये पांच कार्य हों, वही विवाह है। जब तक सप्तपदी नहीं होती, तब तक विवाह हुआ नहीं कहा जा सकता।

वर, कन्या विचार

सबसे प्रथम वर और कन्या के लक्षण तथा वय, जाति, कुल, शील आदि पर विचार करना आवश्यक है। वर में निम्न गुण होना चाहिए। कुलवान, बुद्धिमान, अपनी आजीविका उपार्जन में दक्ष, नीतिज्ञ, विनयवान, रूपवान, सच्चे देव शास्त्र गुरु का परम श्रद्धानी, धर्मज्ञ, निरोग, सच्चरित और नपुंसकादि दोषों से विनिर्मुक्त हो।

कन्या में निम्न गुणों का होना आवश्यक है। शीलवती, विदुषी, सौम्य, विनयवान, गृहस्थ क्रिया की जानकार, धर्म के रहस्य की वेत्ता, लेखन, पठन, रंधन, सीना, पिरोना आदि गृहकार्यों में दक्ष होना चाहिए, यदि इन गुणों से विपरीत दुर्गुणों की खानि होगी तो अपने साथ-साथ सारे कुटुम्ब को कुमार्ग में घसीट ले जाएगी। वास्तव में गृहिणी का नाम ही घर है, ईंट, पत्थर, लकड़ी आदि के समुदाय का नाम घर नहीं है। साधारण बोलचाल में भी घर शब्द स्त्री के अर्थ में ही व्यवहृत होता है, जैसे एक मनुष्य कहता है कि मैं घर सहित आया हूं. जिसका अभिप्राय यही है कि मैं

अपनी स्त्री को साथ लाया हूं। घर की शोभा स्त्री ही है। गुणवाली स्त्री घर को स्वर्ग बना सकती है। यदि उक्त गुण न हों तो वह घर नरक बन जाता है।

अत: गृहिणी में उक्त गुण होना चाहिए। वर की आयु कन्या की आयु से ३-४ वर्ष से अधिक से अधिक १० बर्ष बड़ी होनी चाहिए।

वाग्दान (सगाई)

वाग्दान का मतलब परस्पर में वचनों का दे देना है अर्थात् जब वर के पिता को कन्या और कन्या के पिता को वर योग्य जंच जाए तब पंचों की साक्षी पूर्वक दोनों एक-दूसरे से वचनबद्ध हो जाते हैं, इसी को सगाई कहते हैं। कन्या का पिता वर के पिता से कहे कि कुटुम्बियों, पंचों और प्रदान पुरुषों को साक्षी पूर्वक मैंने अपनी कन्या को आपके सुपुत्र के लिए देना निश्चय किया है, आप अपने सुपुत्र के लिए इसे स्वीकार कीजिए। इसके उत्तर में वर का पिता भी प्रतिज्ञा करे कि मैं पंचों एवं प्रमुखों की साक्षी पूर्वक आपकी कन्या को अपने सुपुत्र के लिए स्वीकार करता हूं। इसी समय अपनी शक्ति, जाति व देशानुकूल द्रव्य व कपड़े आदि भी देना चाहिए।

वाग्दान का त्याग किन परिस्थितियों में हो सकता है

वाग्दान के पश्चात् यदि वर विदेश चला गया हो और तीन वर्ष तक भी लौट कर न आया हो और न पत्रादि द्वारा समाचार ही मिला हो या त्यागी, ब्रह्मचारी हो गया हो अथवा नपुंसक, कोढ़ो, अंधा या मुत्यु को प्राप्त हो गया हो तो ऐसी परिस्थिति में कन्या का पिता एवं पंच जन उस कन्या का किसी दूसरे योग्य वर के साथ वाग्दान करा दें।

लग्न भेजना

वाग्दान के पश्चात् पाणिग्रहण के मुहूर्त से २१, १५ या ११ दिन पूर्व शुभ मुहूर्त में कन्या का पिता नव देव पूजन करा कर इष्ट बंधु वर्गों व पंचों की उपस्थिति में पाणिग्रहण कराने के दिन लग्नादि (विवाह का समस्त कार्य विभाग) का निर्णय करके पत्र में लिखवा कर किसी योग्य सेवक व विश्वासी व्यक्ति द्वारा वर के पिता के यहां भेज देना लग्न कहलाता है जिसके लिखने की प्रणाली प्राय: यह होती है।

लग्न पत्रिका

।। श्री वीतरागाय नमः ।।

सिद्धि श्री ---------- शुभस्थाने सर्वोपमा विराजमान ---------- साहजी श्री ---------- श्री ---------- श्री ---------- श्री ---------- तथा श्री ---------- योग्य लिखी ---------- से ---------- का सादर जय जिनेन्द्र बंचना जी। अपरंच हमारे यहां ---------- की सुपुत्री सौ. का ---------- का पाणिग्रहण संस्कार आपके यहां श्री ---------- के सुपुत्र चि. ---------- के साथ शुभ मिती ---------- संवत् ---------- वीर नि. सं ---------- तदनुसार वार ---------- दिनांक ---------- सन् ---------- को होना निश्चित हुआ है जिसका पाणिग्रहण (फेरों) का समय ---------- बजे है। तोरण निकासी का समय ---------- है। अतः आप सभी महानुभावों से सविनय निवेदन है कि आप बरात लेकर समय से पूर्व पधारें। आपके पधारने से ही सारी शोभा है।

'इति शुभम्'

लग्न लेना

वर का पिता लग्न के आने पर अपने कुटम्ब जनों, इष्टमित्रों व पंचों को सम्मान सहित बुलाएं और उनके समक्ष नव देव पूजन कराए। पश्चात् लग्न पत्र और चिट्ठी को पढ़वा कर सबको सुना दे तथा बुलाए गए सज्जनों का प्रचलित प्रथा के अनुसार सत्कार करें। और लग्न पत्रिका लाने वाले व्यक्ति को स्वीकृति का उचित पत्रोत्तर लिख दें तथा उसे यथायोग्य सत्कार पूर्वक विदा कर दें।

तिलक मंत्र

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलम् गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन-धर्मोऽस्तु मंगलम्।।

कंकण मंत्र (रक्षा सूत्र)

जिनेन्द्र गुरु पूजनं, श्रुत वचः सदा धारणं:।
स्वशील यम रक्षणं, ददन सत्तपो वृंहणम्।।
इति प्रथित षट क्रिया, निरतिचारमास्तां तवे
त्यथ प्रथित कर्मणि, विहित रक्षिका बंधनं।।

विवाह हाथ लेने से मतलब विवाह कार्य में प्रथम ही हाथ डालना है। यह क्रिया सबसे पहले की जाती है। सबसे पहले वर और कन्या का पिता श्री मंदिरजी में प्रातः काल बड़े आनन्दपूर्वक वर एवं कन्या को साथ लेकर श्री जिनेन्द्र देव की पूजन करें, पश्चात् शुभ समय में वर एवं कन्या के तिलक निकाल कर रक्षा सूत्र बांध दें, पश्चात् पांच या सात सौभाग्यवती स्त्रियों से गेहूं, मूंग आदि अनाज जो विवाह में काम आएगा उसको शोधने चुगने आदि का कार्य कराएं। आगत स्त्रियों को गुड़, बतासा आदि बांटे।

छोटा बान (विनायक) बैठाना

विवाह के कम से कम पांच या सात दिन पूर्व कन्या और वर अपने-अपने यहां के श्री जिन मंदिर में जाकर शुभ मुहूर्त में विनायक यंत्र की पूजा करे। यहां से घर आकर गृहस्थाचार्य से कंकण बंधन करावें। कंकण बंधन कन्या के बांए हाथ में और वर के दाहिने हाथ में किया जाए। यदि विनायक यंत्र की प्रतिदिन पूजा कर सकते हों तो इसी दिन घर पर लाकर एकांत स्थान में विराजमान कर देना चाहिए और विवाह होने के समय तक रखना चाहिए।

सांकड़ी (बड़ा बान बैठाना)

विवाह के कम से कम तीन दिन पूर्व दूसरी बार मंदिर में जाकर वर और कन्या पूजन करें और घर जाकर पूर्ववत् कंकण बंधन करावें।

कन्या के घर वेदी मंडप हेतु बर्तन लाना

जिस दिन यह शुभ क्रिया करनी हो उसके कुछ समय पहले एक आदमी को कुम्हार के यहां भेजकर बर्तन लाने के लिए कहलवा देना चाहिए। जब कुम्हार बर्तन लेकर दरवाजे के बाहर आ जावे तब सौभाग्यवती स्त्रियां मंगलगान गाती हुई जाएं और कुम्हार को नारियल तथा कुछ द्रव्य देकर संतुष्ट करें। पश्चात् छोटे-बड़े सब मिलाकर २० या २८ बर्तन और एक कलश जिसे पुष्पमाला तथा बिजौरा आदि से सुशोभित किया गया हो, उसे तथा उन कुल बर्तनों को बड़े उत्साह सहित मंगलगानपूर्वक घर के अंदर ले आएं तथा निरापद स्थान पर रख दें।

स्तम्भ (थाम) आरोहण विधान

गृहांगण के मध्य भाग में चार हाथ लंबी-चौड़ी

चबूतरी की रचना करके ठीक कटनी के पीछे मध्य में जो स्तंभ बढ़ई के यहां से आया है, उसी के अनुसार गड्ढा खुदवाए। गर्त खुदाने के पश्चात् सात सुहागिन औरतें उस स्तंभ को मंगलगान पूर्वक दरवाजे के बाहर से घर के आंगन में जहां विवाह वेदी तैयार हुई है, लाकर एक स्थान पर रख दें, उसी समय गृहस्थाचार्य कन्या को पूर्व की ओर मुंह करके बिठाएं तथा उन्हीं सात सुहागिन औरतों को वहीं खड़ी करके जो गड्ढा स्तंभ रोपने के लिए खुदाया है उसके ऊपर चावलों का स्वास्तिक निकालकर कन्या के सामने जिसके चारों ओर स्वास्तिक निकाला गया है ऐसे मंगल कलश को स्थापित करें, पश्चात् उन्हीं सात सुहागिनों के व कन्या के ललाट पर तिलक निकलवा दें, बाएं हाथ में नाल बांध दें, तथा प्रत्येक के हाथ में सुपारी, मूंग, दूर्वा, हल्दी, सरसों, अक्षत तथा पुष्प देकर मंगलाष्टक पढ़कर कलश में डलवा दें, सवा रूपया नकदी कन्या के हाथ से उसी कलश में डलवा दें। मुख पर श्रीफल रखकर लाल कपड़ा और ऊपर से मोली लपेट कर माला पहना कर स्थापना कर दें। पश्चात् कन्या से नवदेव पूजन कराकर एक छबड़ी में मंगल कलश रखकर वेदी से एक ऊंचे स्तंभ पर सतिया बनावें, चारों दिशाओं में चार खूंटी लगवा दें जिससे वह छबड़ी ठीक बीच में आ जाए, उसमें आम्र पत्र व ध्वजादि सहित मंगल कलश स्थापन मंत्र पढ़ कलश को स्थापित कर मजबूत रस्सी से बंधवाकर उस खड्डे में इस स्तंभ को आरोपित कर दें।

मंत्र : *ॐ ह्रीं स्वस्तये मंगल कलश स्थापनं करोमि क्ष्वीं हंसः स्वाहा।*

भात (मायरा) का पहनना

पाणिग्रहण के पहले और थाम गढ़ने के पश्चात् कन्या का मामा जो वस्त्राभूषण लाया है उन्हें अपने संबंधियों को स्थानीय पंचायत के समक्ष पहनाता है उसे भात पहरना कहते हैं। इस अवसर पर कन्या का मामा अपनी शक्ति के अनुसार लाई लागती को वस्त्रादि देता है। जिस प्रकार इधर कन्या का मामा अपने संबंधियों को भात पहनाता है उसी प्रकार वर की निकासी के पहले वर का मामा भी वर के माता-पिता आदि अपने लाई लागतियों को भात पहनाता है। विवाह की आदि में ये शुभ कार्य बड़े महत्व का समझा जाता है। यदि किसी का सगा मामा नहीं होता तो इसी कार्य की पूर्ति के लिए किसी दूसरे को (उसी गोत्र के धर्म भाई को) खड़ा करके यह कार्य कराया जाता है।

घुड़ चढ़ी (निकासी)

बरात चढ़ने से कुछ समय पूर्व वर को स्नान कराकर वस्त्राभूषणों से अलंकृत कर मुकट बंधन करवा दें। पश्चात् नव देव पूजन कराकर तिलक, रक्षा बंधन कर आशीर्वाद के पुष्पक्षेपण कर दें। पीछे लौकिक शिष्टाचार को पूरा कर गाजे-बाजे के साथ सौभाग्यवती स्त्रियों के मंगलगान पूर्वक श्वसुर गृह यात्रा की निर्विघ्न पूर्णता और मंगल कामना हेतु घोड़े पर सवार हो श्री जिनालय में जाकर भगवान का दर्शन स्तवन वंदना करें और यथाशक्ति श्रीफल व कुछ द्रव्य भेंट कर अपने कुटुंबी, भाई-बंधुओं और बारातियों के साथ उत्सव के साथ श्वसुर घर पर जाने के लिए प्रस्थान करें।

सज्जन मिलावा और तोरण विधान

कन्या का पिता अपने संबंधियों एवं स्थानीय पंचायत के सज्जनों को लेकर वर पक्ष वालों के यहां जनवासे में जाए। वर पक्ष वाले भी कन्या पक्ष वाले सज्जनों को आता हुआ देख कर उठें और उन्हें बड़े

सत्कार से बिठावें। पश्चात् उभय तरफ के संबंधी क्रमशः परस्पर हार्दिक प्रेम प्रकट करते हुए मिलें, इसी का नाम सज्जन मिलावा है। इस अवसर पर कन्या पक्ष की ओर से एक बड़ा घड़ा या अन्य कोई बर्तन आता है और वह वर पक्ष वालों के यहां रह जाता है। वर पक्ष वालों को कन्या पक्ष वाले अपनी शक्ति अनुसार इस समय कुछ नकद द्रव्य देते हैं और वह रुपया विवाह का विनायक द्रव्य समझा जाता है। इसी समय वर को पगड़ी बांधते हैं और जुहारी करते हैं। तिलक करें, रक्षा सूत्र बांधें। पश्चात् कन्या पक्ष वाले वर पक्ष वालों से यह कहकर कि आप सर्व सज्जन तोरण आदि विधान में वर के साथ पधारिएगा। वर का पिता समस्त बरातियों के साथ जिन मंदिर जाकर नृत्यगान और मधुर बाजों की ध्वनि सहित श्वसुर के दरवाजे पर पहुंचें। तब वर के मुख चंद्र को निरखती हुई सासू मोती मिली हुई खीलों की अंजुलि भर के वर के ऊपर बिखेरें। पश्चात् रोली, सरसों, पुष्प, अक्षत, दीपक सहित थाल लेकर वर के सामने खड़ी होकर वर के पैरों पर जल की धार छोड़े, पश्चात् आरती करें। और यथा साध्य मुद्रिका आदि अर्पण करें, पश्चात् तोरण का वर स्पर्श करे। यहां तोरण स्पर्श करने का मतलब वर का प्रथम ही श्वसुर द्वार पर आना और उसे अवलोकन करना है। कोई-कोई भाई जो दरवाजे पर लगे हुए काष्ठ के तोरण में अनेक चिड़ियां एवं शुक वगैरह की मूर्तियों का मारना समझते हैं। यह उनकी भूल है। वास्तव में दरवाजे की शोभा अनेक प्रकार के चित्रों से बढ़ानी चाहिए। मालूम होता है कि जो ये काष्ठ का तोरण बनाया जाता है वह दरवाजों की सजावट का ही अंग है। ऐसे-ऐसे अनेक चित्रों तथा बेलबूटों से दरवाजा सजाया जाता होगा, लेकिन अन्य धर्मियों की संगति से ऐसा लोगों ने समझ लिया है और वर के हाथ से एक नींब की लकड़ी से उस तोरण का स्पर्श कराते हैं तथा ''तोरण मार दिया'' यह जो कहते हैं, वह भी ठीक नहीं है।

कोई क्रियाएं ऐसी भी हों जो पहले से चली आ रही है और जिनके करने से हमारे सम्यकत्व एवं चरित्र में कोई बाधा नहीं आती हो, ऐसी क्रियाएं वृद्ध पुरुषों के कहने पर कर लेने में कोई हानि नहीं हैं, लेकिन बहुत-सी लौकिक क्रियाएं जो अन्य मतावलम्बियों की देखादेखी हमारे जैन धर्म में समा गई हों, जिनके करने से शास्त्र विरोध एवं मिथ्यात्व की वृद्धि हो, उन क्रियाओं को कभी नहीं करना चाहिए। कहा भी गया है :

सर्वोषामेव जैनानाम् प्रमाणं लौकिको विधिः।
यत्र सम्यक्त्व हानिर्न, यत्र न व्रत-दूषणम्।।

पाणिग्रहण संस्कार विधि

चार घातिया कर्म हनि पाया पद अरहंत।
विघ्न हरण मंगल करन, नमूं आदि भगवंत।।

वर के आने के पहले हवन सामग्री तथा अष्ट द्रव्य आदि सब सामान यथास्थान पर तैयार करके गृहस्थाचार्य को रखवा लेना चाहिए। पश्चात् श्री मंदिरजी से श्री विनायक यंत्र को मंगवाकर पहली कटनी पर जो सिंहासन रखा है उस पर विराजमान करा दें। हवन कुंड में स्वास्तिक सहित अग्निमंडलादि भी लिखकर स्थापन कर लें। पाणिग्रहण के निश्चय किए हुए शुभ मुहूर्त से कुछ समय पहले वर को सवारी पर आरूढ़ होकर श्री मंदिरजी में जिनेंद्र देव के दर्शन करके श्वसुर गृह की ओर आना चाहिए। वर का शुभागमन सुनकर उसकी सास मय सौभाग्यवती स्त्रियों के हाथ में आरती का थाल लिए हुए दरवाजे पर आए और प्रथम ही वर के चरणों पर जल छोड़े। पश्चात् वर की आरती करे और मुद्रिका आदि आभूषण देवे। इस

समय गृहस्थाचार्य मंगलाष्टक पढ़ें और स्त्रियां मधुर गान गाएं, बाजों की मधुर ध्वनि हो। वर के पिता द्वारा जो कन्या के लिए वस्त्राभूषण लाए गए हैं, उन्हें कन्या को स्नानादि कराके पहले ही पहना देना चाहिए। इतना होने पर वर का मामा वर को गोदी में लेकर या हाथ पकड़कर अंदर वेदी के पास लाए और वेदी के बाईं ओर पूर्व मुख करके बिठा देवें। पश्चात् कन्या का मामा भी कन्या को भीतर से गोदी में लाकर वर के दाहिनी ओर पूर्व मुख करके बिठा दे। इस समय बाजों की मधुर ध्वनि होनी चाहिए। जब वर कन्या अपने-अपने स्थान पर बैठ जाएं तब गृहस्थाचार्य उनसे सिद्ध यंत्र को नमस्कार कराएं। पश्चात् मध्य कटनी के दक्षिण की ओर शास्त्रजी विराजमान करे तथा नवरत्न, गंध पुष्प अक्षत इत्यादि मांगलिक वस्तुओं से युक्त करके जल से भरे हुए कलश को नारियल सहित लाल व पीले वस्त्र से ढककर निम्न गद्य के उच्चारण पूर्वक मध्य कटनी पर स्थापन करें -

ऊँ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्राह्मणों मते मासोत्तम -------- मासे -----पक्षे ---- तिथौ ----- वासरे सर्वदूषण रहिते-ऽस्मिन् विधीयमान विवाह (विधान) कर्मणि ----- गोत्रोऽहं -------पौत्रः ------ पुत्र -------- नामाऽहं हवनमंडप भूमि शुद्धयर्थ, क्रिया-शुद्धयर्थं पुण्याह वाचनार्थ, नवरत्नगंध पुष्पाक्षतादि-बीजपूर-शोभितं शुद्ध प्रासुक तीर्थजलं पूरितं मंगलकलश स्थापनं करोमि क्ष्वीं क्ष्वीं हंसः स्वाहा।

गठजोड़ा (ग्रंथिबंधन)

सभा मंडप में समस्त स्त्री-पुरुषों के समक्ष सौभाग्यवती स्त्री के द्वारा कन्या की ओढ़नी (साड़ी) के पल्ले में चवत्री १ सुपारी, हल्दी की गांठ, सरसों, पुष्प रखकर वर के दुपट्टे के पल्ले के साथ निम्न मंत्र बोलते हुए गठजोड़ा करा दें।

अस्मिन् जन्मन्येष बंधोद्वयोर्वै,
कामे धर्मे वा गृहस्थत्व भाजि।
योगो जातः पंच देवाग्नि साक्षी,
जाया पत्योरंचल ग्रन्थि बंधात्।।

गठजोड़े का मतलब यह है कि दोनों दंपतियों के समस्त लौकिक और धार्मिक कार्यों में सर्वदा मजबूत प्रेम गांठ है जो कभी नहीं खुल सकती क्योंकि यह देव, अग्नि और पंचों की साक्षी में बंधी है।

हथलेवा (पाणिग्रहण)

इसके पश्चात् कन्या के पिता कन्या के बाएं हाथ में व वर के दाहिने हाथ में पिसी हुई हल्दी को जल में घोल कर लेप करें, यानी पीले हाथ करें, इसे ही पीले हाथ करना कहा जाता है। इसके पश्चात् गीली मेंहदी व एक रूपया वर के सीधे हाथ में रखकर उस पर कन्या का बांया हाथ निम्न श्लोक बोलते हुए जोड़ दें। कहीं यह क्रिया भाई भौजाई, कहीं सौभाग्यवती स्त्रियां, कहीं पिता करते हैं।

हारिद्र पंकमवलिप्य सुवासिनीभि
दत्तं द्वयो जनकयोः खलु तौ गृहीत्वा।
वामं करं निज सुतां भवमग्न-पाणिम्,
लिम्पेद्वरस्य च कर-द्वय योजनार्थ।।

इस विधि के होते ही हथलेवा अवश्य छुड़ा देना चाहिए। कन्या का पिता तिलक कर हथलेवा का दस्तूर देकर वर को राजी करें।

फेरे और सप्तपदी

हथलेवा के पश्चात् वर कन्या को खड़ा करा के कन्या को आगे और वर को पीछे रखकर वेदी में चंवरी के मध्य में यंत्र सहित कटनी और हवन की प्रज्वलित अग्नि युक्त स्थंडिल के चारों ओर छह फेरे दिलवाएं। प्रत्येक प्रदक्षिणा के अंत में जब वर और कन्या वेदी के सन्मुख आ जाएं तब निम्न क्रम से एक-एक अर्घ्य चढ़ावें।

(१) ॐ ह्रीं सज्जाति परम स्थानाय अर्घ्यं।

(२) ॐ ह्रीं सद्गृहस्थ परम स्थानाय अर्घ्यं।

(३) ॐ ह्रीं पारिव्राज्य परम स्थानाय अर्घ्यं।

(४) ॐ ह्रीं सुरेन्द्र परम स्थानाय अर्घ्यं।

(५) ॐ ह्रीं साम्राज्य परम स्थानाय अर्घ्यं।

(६) ॐ ह्रीं आर्हन्त्य परम स्थानाय अर्घ्यं।

छह फेरों के पश्चात् वर और कन्या को अपने पूर्व स्थान पर पहले के समान खड़ा करा दें, यदि खड़ा रहने में आकुलता हो तो गृहस्थाचार्य उनको बिठा सकते हैं। इसी अवसर पर वर की ओर से सात प्रतिज्ञाएं कन्या करे।

वर की ओर से ७ प्रतिज्ञाएं

(१) मेरे कुटुंबियों की यथायोग्य सेवा, विनय, आदर सत्कार करना।

तुम्हें पहले हे प्रिये मेरे सभी परिवार के।
साथ में करनी विनय होगी यथावत जान के।।
चूंकि करना बड़ों की सेवा हमारा फर्ज है।
सुख इसी के साथ है अरु कुछ न अपना हर्ज है।।१।।

(२) मेरी आज्ञा को कभी भंग न करना।

तुम्हें मेरी नित सदाज्ञा पालनो होगी प्रिये।
नहीं उल्लंघन करि सकोगी, यह समझ लो तुम हिये।।
बढ़ै इज्जत आबरू तुम्हारी सभी के बीच में।
सुख हमें भी प्राप्त हो, दुख हो नहिं अध बीच में।।२।।

(३) कड़वा और मर्म भेदी वचन मत बोलना।

कटुक निष्ठुर वचन तुमको बोलना होगा नहीं।।
क्योंकि इससे सुख गृहस्थी का कभी मिलता नहीं।।
वचन तीखे बोलने से दिल दुखै हिंसा लगै।
हर समय संक्लेशता ठाडी रहैं समता भगै।।३।।

(४) सत्पात्रादि (मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका आदि) के घर आने पर अपने मन को कलुषित मत करना।

वचन चौथा भी हमारा मानना होगा तुम्हें।
घर में सत्पात्रों को देना दान भी होगा तुम्हें।।
मन न कलुषित करना होगा खूब दिल में सोच लो।
दान में शोभे गृही ये वाक्य ऋषि के देख लो।।४।।

(५) रात्रि को दूसरे के घर पर बिना पूछे मत जाना।

रात्रि में पर घर तुम्हें जाना न होगा हे प्रिये।

क्योंकि सतियों के चरित में लगे धब्बा इमि किये।।

यदि पड़े मौका तुम्हें सहधर्मि के घर पर कदा।

जाने का तब बड़ों को ले साथ में जाना तदा।। ५।।

(६) जहां बहुत से आदमी जमा हो रहे हों भीड़-भाड़ हो ऐसे स्थान पर मत जाना।

जिस जगह बहुजन ठसाठस भरे हों मारग न हो।

उस जगह जाना तुम्हारा वाजिबी है क्या कहो।।

क्योंकि ऐसी जगह में इज्जत धरम बचता नहीं।

जल में डुबकी मारि क्या सूखा कोई निकला कहीं।

(७) जिसका आचरण खराब है ऐसे मांस मद्यादि सेवन करने वाले

कुत्सित धर्मियों के घर पर मत जाना।

दुराचारी मद्यापायिन के न घर जाना कभी।

क्योंकि इनके साथ से खो बैठना होगा सभी।।

होय जाति च्युंत जगत में धर्म धन अपना हरै।

सच्चरित्र धरै विनय युत, वह उभय सुख विस्तरै।। ७।।

यदि तुम मेरी इन सातों शर्तों को मंजूर करो तो मेरी वामांगी हो सकती हो। तब वधू कहे कि मुझे आपकी उक्त सातों शर्तें मंजूर है। वर के सप्त वचनों को मंजूर कर कन्या वर के प्रति कहे कि आपको भी मेरे सात वचन स्वीकार करने चाहिए।

कन्या की ओर से सात प्रतिज्ञाएं

(१) अन्य स्त्रियों के साथ क्रीड़ा मत करना।

प्रियवर सातों वचन आपके शिरोधार्य कर कहती हूं।

करो आप भी मेरे वचन स्वीकार अर्ज ये करती हूं।

पर कामिनी से नेह करो मत वह विष बुझी कटारी है।

मिलै न सुख ऐसा करने से जग में होय खुआरी है।१।

(२) वेश्यादि खराब स्त्रियों के घर पर मत जाना।

वेश्या जग की झूठी पातल, झूठ प्रेम दिखाती है।

हंसि-हंसि सब धन लूट लेय पीछे जूता दिखलाती है।

धर्म लुटेरी पाप पोटरी, नर्क नसैनी भ्रष्ट सदा।

उसके घर मत जाना प्यारे, सुख न मिलेगा तुम्हें कदा।२।

(३) जुवा मत खेलना।

द्यूत व्यसन की सुनो कथा, जिससे होती है अमित व्यथा।

धन नष्ट होय बुधि भ्रष्ट होय नहीं रहे विवेक चरित्र तथा।

इससे शिकार चोरी जारी, मद्योपल का सेवन होता।

मत खेल खेलना द्यूत कभी हे आर्य। सुख व्यसनी खोता।३।

(४) न्यायोपार्जित द्रव्य कमा कर, योग्य वस्त्र आभरणों से।

मेरा रक्षण करना प्यारे, मत ठुकराना चरणों से।।

अन्याय मार्ग का धन न रहै दिन रात खड़ी आपत्ति रहे।

हे प्राणाधिक। ऐसे धनका तुम त्याग करो जिन वचन कहै।

(५) मन्दिर, तीर्थ क्षेत्रादि धर्म स्थान पर जाने से मुझे मत रोकना।

किसी धर्म कारज से मुझको, मत वंचित स्वामी रखना।

बना संगिनी मुझ अर्द्धांगिन को सब धर्म कार्य मुझ श्रर्द्धांगिन को सब धर्म कार्य करना।

इसीलिए मैंने तुमको, प्राणेश्वर नाथ बनाया है।

क्योंकि बड़ों की संगति से लघु होय बड़ा बतलाया है ॥५।

(६) घर संबंधी कोई बात मुझ से गुप्त मत रखना, ताकि परस्पर सलाह कर सकें।

एक बात जो तुमसे कहती जो है प्रेम बढ़ावन हार।

गृह वा अन्य व्यक्ति संबंधी गुप्त बात हो प्राणाधार।

उसे मुझे निज प्राण बराबर, समझि तुरत कहना प्यारे।

क्योंकि हृदय में रहने से वह, दुख देती है अनिवारे ॥६।

(७) मेरी गुप्त बात दूसरे के आगे प्रकाशित मत करना।

मम संबंधी गुप्त बात को कभी सामने गैरों के।

मत कहना कारण कि तुम्हें वे शरमावेंगे कह कह के।

अपने घर की गुप्त बात को समझदार नहीं कहते हैं।

बल्कि छिपाते हैं उसको वे इज्जत अपनी रखते हैं ॥७।

इसके उत्तर में वर कहे कि ये सातों प्रतिज्ञाएं मुझे मंजूर हैं। जब वर वधू दोनों ही परस्पर में प्रतिज्ञाबद्ध हो जाएं तब वधू को वर के वामांग कर देनी चाहिए उस समय गृहस्थाचार्य दोनों के मस्तकों पर पुष्पांजलि क्षेपै। वर को आगे और कन्या को पीछे करते हुए सातवें फेरे के बाद निम्न मंत्र बोलकर अर्घ्य चढ़ावें।

ॐ ह्रीं निर्वाण परमस्थानाय अर्घ्यं।

सातों फेरे हो जाने के पश्चात् वर और कन्या वेदी के सामने ज्यों के त्यों खड़े हो जाएं, बैठें नहीं और वर कन्या के और कन्या वर को परस्पर वर माला पहनाएं।

यहां पर गृहस्थाचार्य गार्हस्थ्य जीवन के महत्व पर उपदेश दें और दान का महत्व बताकर वर पक्ष तथा कन्या पक्ष दोनों से दान की घोषणा कराएं।